इस सन्दर्भ में यदि मुझको कुछ श्रेय है, तो बस इतना ही कि मैंने श्रीमद्भगवद्गीता को विकृत किए बिना, यथार्थ रूप में (यथारूप—As it is) प्रस्तुत किया है। इस 'श्रीमद्भगवद्गीता यथारूप' संस्करण से पूर्व गीता के जितने भी संस्करण प्रकाशित हुए हैं, उनमें से प्रायः सभी किसी न किसी की स्वार्थ-पूर्ति के लिए लक्षित थे। परन्तु 'श्रीमद्भगवद्गीता' को प्रकाशित करने में हमारा एकमात्र लक्ष्य भगवान् श्रीकृष्ण के संदेश को प्रस्तुत करना है। हमारा काम श्रीकृष्ण की इच्छा को प्रकट करना है; यह राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, वैज्ञानिक आदि लौकिक विद्वानों की मनोधर्मी के समान नहीं है, क्योंकि नाना प्रकार के ज्ञान से युक्त होने पर भी उनमें श्रीकृष्ण के ज्ञान का प्रायः अभाव ही रहता है। जब श्रीकृष्ण कहते हैं कि, **मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजि मां नमस्कुरु**, इत्यादि तो ये नाममात्र के विद्वान् कहते हैं कि श्रीकृष्ण और उनकी अन्तरात्मा में भेद है। परन्तु हम ऐसा नहीं कहते। श्रीकृष्ण अद्वय-तत्त्व हैं; उनके नाम, रूप, दिव्य गुण, लीला आदि में कोई भेद नहीं है। जो मनुष्य परम्परा के अनुसार कृष्णभक्त नहीं है, उसके लिए श्रीकृष्ण के इस अद्वय-तत्त्व को जान पाना कठिन होगा। सामान्यतः देखा गया है कि नामधारी विद्वान्, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक तथा स्वामी आदि जो श्रीकृष्ण के पूर्ण तत्त्वज्ञान से रहित हैं, भगवद्गीता पर भाष्य रचना करने के रूप में श्रीकृष्ण के अस्तित्त्व को ही समाप्त कर देने का प्रयत्न करते हैं। भगवद्गीता के ऐसे अप्रामाणिक भाष्यों को मायावादी भाष्य कहा जाता है। श्रीचैतन्य महाप्रभु ने हमें इन अप्रामाणिक व्याख्याकारों से सचेत किया है। उनकी वाणी है कि जो कोई भी गीता को मायावादी मत के अनुसार समझने का प्रयत्न करेगा, वह महान् अपराध कर बैठेगा। गीता का ऐसा भ्रान्त विद्यार्थी परमार्थ के पथ में निश्चित रूप से मोहित हो जाता है और अपने घर—भगवद्धाम को नहीं जा पाता।

हमारा एकमात्र प्रयोजन श्रीमद्भगवद्गीता को यथारूप (As it is) प्रस्तुत करना है, जिससे बद्ध जीव का उसी लक्ष्य की ओर मार्गदर्शन हो सके, जिसके लिए ब्रह्मा के प्रत्येक दिन में, अर्थात् ८,६०,००,००,००० वर्षों के कल्प में भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं अवतरित होते हैं। इस प्रयोजन का गीता में उल्लेख है और हमें इसे उसी रूप में (यथारूप) ग्रहण करना है। अन्यथा, भगवद्गीता और उसके वक्ता भगवान् श्रीकृष्ण के तत्त्व को जानने के लिए साधन करना व्यर्थ होगा। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता सर्वप्रथम सूर्यदेव को करोड़ों वर्ष पूर्व सुनाई थी। इस सत्य को स्वीकार कर तथा श्रीकृष्ण के प्रमाण के आधार पर अर्थ का अनर्थ किए बिना गीता के ऐतिहासिक माहात्म्य को समझ लेना चाहिए। श्रीकृष्ण की इच्छा के विरुद्ध गीता का अर्थ करना महान् अपराध है। इससे अपनी रक्षा के लिए यह जान लेना आवश्यक है कि श्रीकृष्ण भगवान् हैं, जैसा उनके प्रथम शिष्य अर्जुन ने स्वयं उनसे जाना था। गीता का ऐसा ज्ञान ही यथार्थ में मानव समाज के कल्याण-कार्य के लिए श्रेयस्कर तथा प्रामाणिक है; मानव जीवन की सार्थकता वस्तुतः इसी में है।

कृष्णभावनामृत आन्दोलन जीवन की परम संसिद्धि प्राप्त कराता है; इसलिए यह